प्रातःक्लास पिताश्री 23/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। ओमशान्ति का अर्थ क्या है? स्वधर्म में बैठो या अपन को आत्मा समझ बैठो, तो शान्ति में बैठेंगे। इसको कहा जाता है स्वधर्म में बैठना। भगवानुवाचः, स्वधर्म में बैठो। तुम बच्चों का स्वधर्म है, शांत। तुम्हारा निवास स्थान है, शांतिधाम। तो अपन को आत्मा समझ स्वधर्म में बैठो। तुम्हारा बाप तुमको बैठ पढ़ाते हैं। बेहद का बाप बेहद की पढ़ाई पढ़ाते हैं; क्योंकि बेहद का सुख देने वाला है। पढाई से सुख मिलता है। अभी बाप कहते हैं, अपन को आत्मा समझ बैठो। बेहद का बाप आया हुआ है तुमको हीरे जैसा बनाने। हीरे जैसे देवी–देवता ही होते हैं। वह कब बनते हैं? इतने ऊँचे पुरुषोत्तम कैसे बने? यह कोई भी बता न सके, सिवाय तुम्हारे। तुमको भी बाप ने बताया है। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे तुम ब्राह्मण ठहरे ना। फिर तुमको देवता बनना है। ब्राह्मणों की होती है, चोटी। तुम शूद्र से ब्राह्मण बने हो। जो प्रजापिता ब्रह्मा मुख वंशावली हैं, कुख वंशावली तो नहीं है। कलयुग में सभी हैं, कुख वंशावली। साधु–संत, ऋषि–मुनि आदि सभी द्वापर से लेकर कुख वंशावली बने हैं। अभी तुम सिर्फ़ प्रजापिता ब्रह्मा के कुमार–कुमारियाँ ही मुख वंशावली बने हो। वह ब्र(ा)ह्मण तो हैं, शूद्र सम्प्रदाय के। वह उत्तम नहीं ठहरे। यह तुम्हार है सर्वोत्तम कुल। देवताओं से भी उत्तम। क्योंकि तुमको पढ़ाने वाला, मनुष्य से देवता बनाने वाला बाप आया है। बच्चों को बैठ समझाते हैं; क्योंकि भक्ति मार्ग वाले तो यहाँ आते ही नहीं हैं। यहाँ आते ही हैं, ज्ञान मार्ग वाले। तुम आते हो बेहद के बाप से भक्ति का फल लेने। अभी भक्ति का फल कौन लेंगे? जिसने सबसे जास्ती भक्ति की होगी। जैसे स्कूल में जो अच्छे पढ़ते हैं, उनको ऊँच पद मिलता है ना। यह भी ऐसे है। जिसने सबसे जास्ती भक्ति की होगी, वही ज्ञान लेंगे सबसे पहले। क्योंकि भक्ति का फल भगवान को ही आकर देना है। यह अच्छी रीत समझने की बातें हैं। अभी तुम पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बनते हो। कलयुगी से सतयुगी, विकारी से निर्विकारी बनते हो। तुम आए ही हो ऐसा बनने लिए। यह भगवान–भगवती हैं, तो ज़रूर इन्हों को भगवान ही पढ़ावेंगे। भगवानुवाच, परन्तु किसको कहा जाता है? भगवान तो एक होता है। भगवान कोई सैकड़ों, हज़ारों नहीं होते हैं। मिट्टी–भित्तर में नहीं होते। बाप को न जानने कारण भारत कितना कंगाल बन गया है। अभी बच्चे जानते हैं, भारत में इनकी राजधानी थी। इन्हों के बाल–बच्चे जो भी थे, राजधानी के मालिक थे। तुम यहाँ आए ही इस राजधानी के मालिक बनने लिए। यह अभी तो नहीं हैं ना। भारत में इन्हों का राज्य था। बच्चों को समझाया जाता है, जब इन देवी–देवताओं की राजधानी थी, सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी तब और कोई धर्म नहीं था। इस सयम फिर और सभी धर्म हैं। यह धर्म है नहीं। यह तो फाउंडेशन है, जिसको थुर कहा जाता है। इस समय मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का थुर सड़ गया है। बाक़ी सभी खड़े हैं। अभी उन सभी की आयु पूरी होती है। यह मनुष्य सृष्ट रूपी वैरायटी झाड़ है। भिन्न–2 नाम–रूप, देश–काल। अनेकानेक हैं ना। कितना बड़ा झाड़ है। बाप समझाते हैं, कल्प–2 यह झाड़ जड़–जड़ीभूत, तमोप्रधान हो जाता है, तब फिर मैं आता हूँ। तुम मुझे पुकारते हो, बाबा आओ, हम पतितों को आकर पावन बनाओ। हे! पतित–पावन, जब पतित–पावन कहते तो निराकारी बाप ही याद आते हैं। साकारी तो कब याद नहीं आवेगा। पतित–पावन सद्गति दाता एक ही है। जब सतयुग था तो तुम्हारी सद्गति थी। अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर बैठे हो। बाक़ी और सभी कलयुग में हैं। तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग पर। उत्तम ते उत्तम वा ऊँच ते ऊँच गाया जाता है ना। एक भगवान। ऊँच (तेरा काम), ऊँच तेरा नाम, ऊँच ते ऊँच तेरा धाम। ऊँच ते ऊँच रहते हैं, परमधाम में। यह बड़ा सहज समझने का है। सतयुग, त्रेत फिर है संगमयुग। इनका भी किसको पता नहीं है। जो भी मनुष्य मात्र हैं उनको कलयुगी, शूद्र, पतित सम्प्रदाय कहेंगे। सतयुग में तो कोई भी पतित होता ही नहीं। शास्त्रों में कथाएँ लिख दी हैं। रावण ने सीता को चुराया। फिर ऋषि पाय(स) बच्चे हुये। ..... यह सभी हैं, कहानी। भक्ति मार्ग की बातें सुन–सुन कर तुम्हारी हालत क्या हो गई है। यह भी ड्राम में भक्ति मार्ग बना हुआ है। ऐसे नहीं कह सकते, बाबा फिर यह भक्ति मार्ग

क्यों बनाया। बाप कहते हैं, यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। सुख और दुःख, हार और जीत का खेल है। यह कोई मनुष्य ने नहीं बनाया। यह तो अनादि है। मैं बैठ इस ड्रामा का राज़ समझाता हूँ। यह अनादि ड्रामा है। मैंने बनाया तो फिर कहेंगे कब बनाया? बाप कहते ही हैं अनादि है। अनादि, अविनाशी ड्रामा है ना। शुरू कब होता है यह सवाल नहीं हो सकता। यह तो अनादि बना–बनाया ड्रामा है। अगर कहें फलाने समय शुरू हुआ, तो फिर कहेंगे बंद कब होगा? परन्तु नहीं यह तो चक्र चलता ही रहता है। तुम चित्र भी बनाते हो। ब्रह्मा विष्णु–शंकर का भी। यह देवताएँ त्रिमूर्ति दिखाते हैं। उसमें भी ऊँच ते ऊँच बाप को दिखलाते नहीं हैं। उनको अलग कर देते हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापना सो तो अभी तो रही है। राजधानी में तो सभी प्रकार के पद होते हैं। प्रज़ीडेन्ट है, प्राइम मिनिस्टर है, चीफ़ मिनिस्टर है, यह सभी होते हैं, राय देने वाले। सतयुग में कोई राय देने वाला चाहिए नहीं। अभी तुमको जो राय अथवा मत मितली है वह अविनाशी बन जाता है। अभी देखो, कितने राय देने वाले हैं। ढेर के ढेर हैं। पैसे खर्च कर मिनिस्टर आदि बनते हैं, राय देने लिए। खुद गवर्मेन्ट भी कहती है यह क्रप्टिव है। बहुत खाते हैं। यह तो है ही कलयुग। वहाँ तो ऐसे होती ही नहीं। वज़ीर आदि की दरकार ही नहीं। अभी तुमको बाप से श्रीमत मिलती है। फिर जब तुम महाराजा–महारानी बनते हो तो वहाँ श्रीमत की दरकार नहीं। यह मत 21 जन्म लिए मिलती है। तुम्हारी सद्गति हो जाती है। वहाँ तो गुरु की दरकार ही नहीं। सतयुग में न गुरु न वज़ीर होता है। अभी तुमको श्रीमत मिलती है अविनाशी, 21 पीढ़ी लिए। 21 बुढ़ापे लिए। बूढ़ा बने फिर शरीर छोड़ जाकर बच्चा बनेंगे। जैसे सर्प एक खल छोड़ दूसरी लेती है। जनावरों का भी मिसाल दिया जाता है ना। मनुष्यों में तो ज़रा भी अक्ल नहीं है; क्योंकि पत्थर बुद्धि हैं। बाप समझाते हैं, मीठे–2 बच्चों तुम ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ हो। तुम जानते हो बाहर वाले जो हैं, वह सभी हैं भ्रष्टाचारी। विष्टा के कीड़े। मूत पलिति। ग्रंथ में भी पढ़ते–सुनते तो सभी हैं ना। मूत पलिति कपड़ धोए। बाप को बुलाते हैं, आकर मूत पलिति कपड़ा धोकर, पवित्र बनाओ हम आत्माओं को। भाईयों ने पुकारा है ना। हे! पतित–पावन, हम सभी आत्माओं के बाप, आकर कपड़ा साफ़ करो। शरीर को तो नहीं धोना है। आत्माओं को धोना है; क्योंकि आत्मा ही पतित बनी है। पतित आत्माओं को आकर पावन बनाओ। परन्तु शास्त्रों में लिख दिय(ा) है मूत पलिति कपड़ धोए, तो सन्यासियों ने उल्टा–सुल्टा उठा लिया है। समझते हैं शरीर मूत पलिति बना है; इसलिए गंगा स्नान करो। परन्तु आत्मा तो उनसे पावन हो न सके। बाप को कहते हैं, हे! पतित–पावन आओ। नदी को तो नहीं कहते। बाबा ने कारण समझाया है मूँझ क्यों हुई है; क्योंकि ग्रंथ में है ना मूत पलिति कपड़ धोए। बाप ने समझाया है बच्चे 84 जन्म मैग्ज़ीमम। इनसे जास्ती 85 जन्म ले नहीं सकते। मिनिमम है एक। एक से कम तो होता ही नहीं। 84 जन्म भी सभी नहीं लेते हैं। तो बाप बच्चों को समझाते हैं, मीठे–2 बच्चों मुझे यहाँ आना पड़ता है। मैं ही ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का बीज रूप हूँ। सत–चित आनंद स्वरूप, ज्ञान का सागर, सुख का सागर शांति का सागर हूँ। तुम वर्सा लेते हो, बेहद के बाप से बेहद का वर्सा। हद के बाप से हद का वर्सा मिलता है। हद के वर्से में दुःख होते हैं; इसलिए बाप को याद करते हैं। अथाह सुख है। बाप ने कहा है, यह 5 विकारों रूपी रावण तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन है। यह आदि, मध्य, अंत दुःख देते हैं। हे! मीठे–2 बच्चों, अगर इस जन्म में ब्राह्मण बनकर काम पर जीत पहने तो जगतजीत बनेंगे। तुम पवित्रता की धारणा करते हो यह बनने लिए। तुम आए ही हो आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करने। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। इसमें पुरुषार्थ कर पावन बनना है। जितने कल्प पहले पावन बने थे सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी की वह ज़रूर बनेंगे। टाइम तो लगता है ना। बाप युक्ति बहुत सहज बताते हैं। अभी बाप के बच्चे तो बने हो। यहाँ तुम किसके पास आए हो? क्या कोई शरीरधारी साधु–संत के पास आए हो? नहीं। तुम कहेंगे हम शिवबाबा के पास आए हैं। वह तो है निराकार। उसने इस शरीर का लोन लिया है।

वह खुद बतलाते हैं यह है बहुत जन्मों के अंत के भी अंत का जन्म। 84 जन्मों के अंत में मैं आया हूँ। तो यह हो गया सबसे जास्ती पतित। मैं आता ही हूँ पुरानी रावण के आसुरी दुनियाँ में और फिर उनके शरीर में, जो अपने जन्मों को नहीं जानते। यह तो बहुत जन्मों के अंत का जन्म, जब उनकी वानप्रस्थ अवस्था है तब मैं प्रवेश करता हूँ। गुरु भी हमेशा वानप्रस्थ अवस्था में किया जाता है। कहते हैं, साठ तो लगे लाठ। घर में रहेंगे तो बच्चों की लाठ लगेगी; इसलिए भागो (घ)र से। बच्चे ऐसे होते हैं जो बाप को लाठी मारने देरी नहीं करते। कहेंगे, कहाँ मरे तो धन हमको मिले। वानप्रस्थियों के बहुत सतसंग आदि होते हैं। बाप ने समझाया है, तुम बच्चों ने बड़ी भूल की है; क्योंकि तुम तो पत्थर बुद्धि हो ना। जिनको तुमने गुरु किया है वह तुमको आरफ़न और विधवा बनाकर चले जाते हैं। उनको फिर तुमने गुरु बनाया है, सद्गति के लिए। तुम पुकारते भी हो, हे! पतित–पावन बाबा सबकी सद्गति दाता तो एक है ना। वह आवेंगे भी ज़रूर संगम पर। सतयुग में सद्गति पाते हो तो बाक़ी सभी शान्ति में रहते हैं। इनको कहा जाता है सर्व की सद्गति। और तो कोई है नहीं। न किसको श्री कह सकते न श्री–श्री कह सकते हैं। श्री अर्थात् श्रेष्ठ होते हैं देवताएँ। श्री ल. श्री ना. उनको कहा जाता है। इन्हों को बनाने वाला कौन? श्री–श्री शिवबाबा। श्री–2 शिवबाबा को ही कहेंगे, जो सर्व की सद्गति करते हैं। जो अपन को यहाँ श्री कहलाते हैं उनकी भी सद्गति करते हैं। तो बाप भूलें सिद्ध कर बतलाते हैं। तुम इतने गिरे कैसे। फिर भी ऐसा होगा तुम वही गुरु आदि करेंगे। चक्र फिर वही रिपीट होगा। भक्ति मार्ग के कितने ढेर चित्र हैं। कितने शास्त्र आदि हैं। अनेकानेक चित्र बने हैं। क्या–2 दंतकथाएँ बैठ सुनाते हैं। तुम सभी उनके शिष्य बन सत–सत करते रहते हो। तो देखो कितने झूठे बन गए हो। झूठी माया झूठी काया.....अभी मिलना चाहिए सच्च। सत्य तो एक बाप को ही कहा जाता है। बाप खुद कहते हैं, मैं तुमको सच्ची कथा सुनाता हूँ। बाक़ी तो जो सभी हैं भक्ति मार्ग के झूठी कथाएँ। जो तुम भक्ति मार्ग में सुनते आए हो, जन्म व जन्म। रामायण, भागवद् आदि सभी में दंतकथाएँ (हैं), फायदा कुछ भी नहीं। इन बातों को तुम ही समझते हो। तुम्हारे में भी कोई भक्त बैठा हुआ होगा तो समझेंगे नहीं। पत्थर बुद्धि हैं ना। भक्ति मार्ग ही है पत्थर मार्ग। अभी तुमको प(ा)रसनाथ बनाया जाता है। भक्ति मार्ग वाले यह बातें सुनने भी नहीं चाहते हैं। कहेंगे हमको तो गुरु से शान्ति मिलती है। स्थाई तो मिल न सके। तुम स्वर्ग़ में रहते हो तो वहाँ हो सुखधाम में। पवित्रता सुख शान्ति सभी वहाँ है। वहाँ झगड़ा आदि होता नहीं। बाक़ी इतने सभी शान्तिधाम में चले जाते हैं। भल सतयुग को लाखों वर्ष कह देते हैं। बाप कहते हैं, लाखों वर्ष की बात ही नहीं। कहते भी है मनुष्य की 84 जन्म। दिन–प्रतिदिन सीढ़ी नीचे उतरते तमोप्रधान बनते जावेंगे। फिर बच्चे भी बिच्छू टिण्डन मिसल पैदा होते हैं। तो बाप समझाते हैं यह स(भी) ड्रामा बना हुआ है। एक्टर होकर ड्रामा के क्रियटर, डायरैक्टर मुख्य एक्टर को जाने तो जंगली जनावर कहेंगे। जनावरों की ड्रामा देखते हैं क्या। बाप कहते हैं, इस बेहद के ड्रामा को कोई भी मनुष्य मात्र नही जान, यह बाप ही आकर समझाते हैं। कहते भी हैं हम आत्मा शरीर लेकर पार्ट बजाती हैं। तो नाटक हुआ ना। नाटक के मुख्य एक्टर कौन हैं, कोई बता न सके। अभी तुम बच्चे ही जानते हो, यह बेहद का ड्रामा कैसे जूं मिसल चलता रहता है। टिक–2 होती रहती है। मुख्य है ऊँच ते ऊँच बाबा। जो आकर समझाते हैं और सर्व की सद्गति भी देते हैं। सतयुग में दूसरे कोई होते ही नहीं। बहुत ही थोड़े होते हैं। वह थोड़े जो होंगे उन्होंने ही सबसे जास्ती भक्ति की होगी। तुम्हारे पास प्रदर्शनी, म्युज़ियम में आवेंगे वह जिन्होंने बहुत भक्ति की है शिव की। एक की भक्ति करना, इसको कहा जाता है अव्यभिचारी भक्ति। फिर बहुतों की भक्ति करते व्यभिचारी बन पड़ते हैं। अभी तो बिल्कुल ही तमोप्रध(ा)न भक्ति है। पहले सतोप्रधान भक्ति थी। फिर सतो., रजो., तमो. में आए हैं। सीढ़ी उतरते–2 तमोप्रधान बन गए हैं, जिस कारण सभी तमोप्रधान बन जाते हैं। ऐसी हालत जब होती है तब ही बाप आते हैं, सभी को सतोप्रधान बनाने। पार्ट तो सभी को मिला हुआ है।

बेहद का एक ही ड्रामा है। इस समय जो भी एक्टर्स हैं, उनमें से एक भी मोक्ष को पा नहीं सकते। कहते हैं, हमको मोक्ष चाहिए। यहाँ हम आने नहीं चाहते हैं; क्योंकि दुःख है। सतयुग में ऐसे कब नहीं कहेंगे। तुम कहते हो यह तो बना बनाया ड्रामा है। एक को भी मोक्ष नहीं मिल सकता। ऐसे बहुत होंगे जिनको गुरु कहते होंगे कि मोक्ष मिल सकता है। बाप कहते हैं, मोक्ष हो नहीं सकता। सबसे जास्ती आना–जाना तो हमको होता है; क्योंकि यह तो सीढ़ी है ना। उतरनी होती है। तुम्हारी सीढ़ी है सबसे बड़ी। सेकण्ड में चढ़ते हो। फिर उतरने की सीढ़ी है। जो पीछे आते हैं उनकी सीढ़ी छोटी। अभी तुम यह कोई मनुष्य से नहीं सुनते हो। मनुष्य कब भगवान नहीं हो सकता। अगर अपन को भगवान कहे, तो वह है हिरण्यकश्यपु। तुमने कथाएँ भी सुनी हैं। अभी भी तुमको कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। आत्मा को कोई लेप–छेप नहीं लगता, जो चाहो सो खाओ–पियो मौज करो। मांस, मदिरा आदि जो चाहे सो खाओ। इतना बड़ा महऋषि कितने ग्राहक विलायत से फंसाकर ले आते हैं। वह भी कहते हैं, सभी कुछ खाओ–पियो। यहाँ तो वह बात नहीं है। बाप कहते हैं विख न खाओ। यह अमृत तुमको एक बार ही मिलता है, जब ज्ञान–सागर आते हैं। सर्व की सद्गति दाता पतित–पावन बाप ही है। मनुष्य को पतित–पावन नहीं कह सकते। गीता में कृष्ण का नाम डाल गीता को झूठा बना दिया है। तुम जानते हो कृष्ण जो गोरा था वही फिर सांवरा बना है; परन्तु वह नाम–रूप, देश–काल तो नहीं है ना। शास्त्रों में सभी है झूठ, सच्च की रत्ती नहीं। भगवान तो एक ही होता है। वह है सभी आत्माओं का बाप। उनको ही सभी याद करते हैं, हे! बाबा हमारे दुःख हरकर सुख दो। आत्मा सुख चाहती है। आत्मा बाप को याद करती है; परन्तु जानते बिल्कुल ही नहीं। जैसे इडियट्स हैं। उसमें भी सबसे जास्ती इडियट्स तुम बने हो। तुम ही गिरे हो फिर बाप तुमको ही ऊँच बनाते हैं। बाप कहते हैं, मैं हूँ ग़रीब निवाज़। दान भी हमेशा ग़रीबों को किया जाता है ना। तुम भी पापात्मा थे, तो तुम्हारा धंधा ही ऐसा था। ईश्वर अर्थ दान करते थे। देते तो पापात्माओं को थे। तो तुम भी पापात्मा बनते गए हो। सीढ़ी नीचे उतरे आए हो। काली पर ब(ी)ल चढ़ते हैं ना वह भी जीव घात करते हैं ना। वह कोई पुण्यात्मा थोड़े ही बनेगा। पुण्यात्मा बनाने वाला एक ही बाप है। सभी को पुण्यात्मा बनाते हैं। इस समय साधु, संत, महात्मा आदि सभी पतित हैं। भगवान ने भी कहा है ना, मैं साधुओं का भी उद्धार करने आता हूँ। वह तो किसकी सद्गति कर न सकें। वह है भक्ति मार्ग के अनेकानेक गुरु। पति के लिए भी कहते हैं, तुम्हारा गुरु, ईश्वर है। उनकी मत पर चलना। अभी बाप कहते हैं, तुम मेरी मत पर चलो। कुमारी पवित्र है तब तो उनको पूजते हैं। तुम कुमारिय(ीं) ने ही भारत को हेविन बनाया है। खिलाते भी कुमारियों को हैं। महिमा भी गाते हैं, वंदेमात्रम। ऐसे कब सुना वंदे पित्रम? बेहद का बाप सृष्टि चक्र का राज़ बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं मैं तो शास्त्र आदि कुछ नहीं पढ़ता हूँ। मैं तो ज्ञान का सागर हूँ ना। बाकी वह सभी हैं शास्त्रों के अथॉरिटी। सागर नहीं हैं। मैं तुमको सभी वेदों, शास्त्रों का सार ब्रह्मा तन द्वारा बैठ समझाता हूँ। भक्ति किसको कहा जाता है, ज्ञान किसको कहा जाता है अभी तुम समझते हो। भक्ति है अंधियारा। बाप कहते हैं मैं आता हूँ जब भक्ति क अंत होता है। मेरी ति(ी)थि–तारीख नहीं है। अभी बच्चों को राय दी जाती है बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। (फिर) यह शरीर छूट जाए। ऐसे जो बनेंगे वही स्कॉलरशिप लेंगे। तुम्हारी बुद्धि में है अभी हमको वापस जाना है। ..... कहेंगे, हम एक शरीर छोड़ नया लेते हैं। दुःख की बात ही नहीं। यहाँ तो छी–2 शरीर है, तो तुम समझते हो इनको छोड़ कर जावेंगे अपने घर। बाप को याद करना है ज़रूर। वह निराकार बाप ही ज्ञान का सागर है। भग. एक ही होता है। आकर सभी की सद्गति करते हैं। कहते हैं, साधुओं का भी उद्धार करता हूँ। दुगर्ति करने लिए यह जैसे तुम्हारे मालिक हैं। अभी इन्हों को छोड़ो। एक बाप से ही योग लगाओ। तुम सभी आत्माओं को बाप से वर्सा लेने का हक है। अपन को आत्म समझ देही–अभिमानी बनो और बाप को याद करो तो पाप कट जाएँगे। (अच्छा) बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।